अक्टूबर: 2022 वर्ष : 6 अंक : 1

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

जीवन में प्रयास हमेशा कीजिए, "लक्ष्य" मिले या "अनुभव"- दोनों ही अमूल्य है।

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का अक्टूबर 2022 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। सर्वप्रथम मैं आप सभी को दुर्गा पूजा, दशहरा और ईद-ए-मिलाद की बधाई देता हूँ।

भारत एक विशाल देश है। प्राचीनकाल से यहाँ धर्म, भाषा तथा संस्कृति में विविधता रही है।

प्रस्तुत अंक में संस्थान के सितंबर 2022 के कार्यकलापों और अनुसंधान गतिविधियों का विवरण दिया गया है जिसमें प्रमुख है – हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस वर्ष यह आयोजन संस्थान मुख्यालय में ऑफ़लाइन तथा ऑनलाइन दोनों ही मोड में किया गया,एवं संस्थान के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों ने ऑनलाइन मोड में इस कार्यक्रम में भाग लिया।

संस्थान ने मणिपुर सरकार के सहयोग से जनजाति समुदाय की आजीविका में सुधार के लिए जलाशयों भागीदारी से जलाशय मत्स्य उत्पादन वृद्धि कार्यक्रम की पहल एवं सतत आजीविका विकास के लिए सुंदरबन के 500 अनुसूचित जाति के परिवारों की मदद की।

नदियों के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने और उनके संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए हर साल सितंबर के चौथे रविवार को विश्व नदी दिवस मनाया जाता है। संस्थान ने करेला बाग घाट, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश और सोनिया विहार, दिल्ली में यमुना नदी और कोडालबस्ती, पश्चिम बंगाल में तोर्शा नदी के तट पर और में 'विश्व नदी दिवस' मनाया।

अंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

धन्यवाद,

(बसन्त कुमार दास)

मणिपुर के बांध प्रभावित आदिवासी मछुआरों की आजीविका में सुधारः सिफरी की पहल

भारत सरकार के अनुसूचित जनजाति घटक के तहत भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने मत्स्य पालन विभाग, मणिपुर सरकार के सहयोग से राज्य के जलाशयों में भागीदारी से जलाशय मत्स्य उत्पादन वृद्धि कार्यक्रम की पहल की है। इसके लिए राज्य के 3 जलाशयों (मापीथेल जलाशय, कामजोंग जिला; खौपुम जलाशय, नोनी जिला) में मत्स्य उत्पादन वृद्धि कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इन जलाशयों की सहकारी समिति द्वारा प्रबंधित किया जाता है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मत्स्य संवर्धन कार्यक्रम के माध्यम से जलाशयों के बांध प्रभावित जनजाति समुदाय की आजीविका में सुधार करना था। जलाशयों में स्टॉक किए जाने वाले मछली के बीज को उनके मूल स्थान (इन-सीटू) पर ही मछली पालन तकनीक के प्रदर्शन के माध्यम से शुरू किया गया। पेन पालन तकनीक से इन जलाशयों से अतिरिक्त 200 टन मछली उत्पादन में वृद्धि की संभावना की गई है। अनुमानतः नाबार्ड और अन्य बैंकों जैसे आर्थिक निकायों के सहयोग से अन्तर्स्थलीय मछुआरों के लिए पेन पालन प्रणाली मॉडल विकसित किया जाएगा जिससे परिवहन के समय मत्स्य बीजों की मृत्यु दर में कमी और वांछित अंगुलिकाओं की उपलब्धता में वृद्धि हो सकेगी जो जलाशयों में मत्स्य उत्पादन में वृद्धि के लिए एक बड़ी समस्या है।

इस दिशा में, संस्थान ने इन जलाशयों से जुड़े मछुआरों को 2 सिफरी एचडीपीए पेन, 2 टन सिफरी केजग्रो फीड, इंडियन मेजर कार्प के 50,000 मछली बीज वितरित किया। जलाशय मत्स्य संवर्धन कार्यक्रम का उद्घाटन 2 सितंबर, 2022 को डॉ. बि. के. दास, निदेशक,

भाकृअनुप-सिफरी के नेतृत्व में खौपुम जलाशय में श्री अगुइलुंग गंगमेई, पूर्व अतिरिक्त निदेशक और जिला मत्स्य अधिकारी, तमेंगलोंग जिला, श्री लवसन गोलमेई, मत्स्य निरीक्षक, डीएफओ तमेंगलोंग की उपस्थिति में किया गया। साथ ही, खौपुम जलाशय के लगभग 50 मछुआरों के साथ जलाशय मत्स्य प्रबंधन पर एक जन जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था। इसी क्रम में, फुंग्यार एसी के माननीय विधायक श्री लीशियो कीशिंग ने 3 सितंबर 2022 को कामजोंग जिले के मैपिथेल जलाशय में श्री एच. बालकृष्ण सिंह, निदेशक, मत्स्य पालन विभाग, मणिपुर सरकार; श्री वाई नबचंद्र सिंह, डीएफओ उखरुल और मापीथेल जलाशय के ग्राम प्रतिनिधि और आदिवासी मछुआरों की उपस्थिति में पेन पालन की शुरुआत की गई। इस अवसर पर जलाशय मत्स्य प्रबंधन के बारे में मछुआरों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए रामरेई गांव में एक जन जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम की शुरुआत में इंडियन मेजर कार्प के 50,000 मत्स्य बीज की स्टॉकिंग की गई, जिसके बाद मत्स्य सहकारी समिति में सदस्यों को सिफरी केजग्रो फीड का वितरण किया गया। जन जागरूकता कार्यक्रम में, सुश्री थंगजम निरुपदा चानू, वैज्ञानिक, भाकृअनुप-सिफरी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और पेन पालन तकनीक के साथ-साथ जलाशय मत्स्य प्रबंधन के बारे में भी बताया। श्री लीशियो ने खुला जल मात्स्यिकी विकास की दिशा में सिफरी की पहल की सराहना की। उन्होंने मछुआरों से जलाशय की जिम्मेदार मत्स्य प्रबंधन गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होने तथा टिकाऊ मत्स्य पालन प्राप्त करने के लिए मत्स्य पालन की नई तकनीकों को अपनाने के लिए अपील किया ताकि राज्य के मछली उत्पादन की द्रष्टि में योगदान दिया जा सके।

मत्स्य विभाग के निदेशक श्री एच. बालकृष्ण ने सभा को संबोधित किया और जलाशय मत्स्य उत्पादन वृद्धि से संबंधित विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में बताया। उन्होंने जिम्मेदार मत्स्य प्रबंधन के साथ यह बताया कि मणिपुर में मछली उत्पादन को कैसे बढ़ा सकते हैं। इसके लिए मछुआरों से विभिन्न सरकारी गतिविधियों और कार्यक्रमों के प्रति जागरूक होने का आग्रह किया। लोटे-रिहा डीसीसी के पूर्व एडीसी श्री थान्मी काशुंग ने भी मछुआरों को संबोधित किया और उनसे मैपिथेल जलाशय के मत्स्य प्रबंधन में अधिक जिम्मेदार होने का आग्रह किया। मैपीथेल जलाशय के मछुआरे प्रतिनिधि श्री रॉकसन काशुंग ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया और भाकृअनुप-सिफरी, विधायक फुंग्यार एसी, मत्स्य विभाग और सभी संबंधित विभागों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

4 सितंबर 2022 को खुगा जलाशय में पेन पालन की शुरुआत श्री पाओलीनलाल हाओकिप, माननीय विधायक, साईकोट एसी द्वारा श्री ई रामेश्वर सिंह, डीएफओ चुराचांदपुर जिला और स्थानीय प्रतिनिधियों और मछुआरों की उपस्थिति में आईएमसी बीज और सिफरी केजग्रो फीड वितरण के साथ की गई थी। कुगा जलाशय के 100 से अधिक मछुआरों की भागीदारी के साथ जलाशय मत्स्य प्रबंधन पर एक जन-जागरूकता कर्यक्रम आयोजित किया गया। श्री हाओकिप ने जलाशय मत्स्य वृद्धि की ऐसी पहल करने के लिए भाकृअनुप-सिफरी के प्रति आभार व्यक्त किया, जो आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए क्षेत्र की अत्यंत आवश्यकता है। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी, बैरकपुर की देखरेख में कार्यक्रम का समन्वय सुश्री थंगजाम निरुपदा चानू, वैज्ञानिक और डॉ. अपर्णा राय, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में हिन्दी सप्ताह 2022 का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में हिन्दी सप्ताह दिनांक 14 से 20 सितंबर 2022 के बीच आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन दिनांक 14 सितंबर 2022 को संस्थान मुख्यालय में ऑफ़लाइन तथा ऑनलाइन दोनों ही मोड में किया गया,जिसमें संस्थान के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों ने ऑनलाइन मोड में भाग लिया। उद्घाटन समारोह का शुभारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद गीत और द्वीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस समारोह का शुभारंभ डा. सुबीर कुमार नाग, प्रभागाध्यक्ष के स्वागत सम्बोधन के साथ किया गया जिसमें उन्होंने संविधान सभा द्वारा राजभाषा हिन्दी की स्वीकृति तथा अनुमोदन के पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। इसके बाद, राजभाषा प्रतिज्ञा ली गई। आगे संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों और क्षेत्रीय केंद्र प्रमुखों ने अपने-अपने विचार साझा किए। संस्थान के प्रभारी निदेशक तथा सर्वकार्याधिकारी, हिन्दी कक्ष, डा. श्रीकान्त सामन्ता ने राजभाषा हिन्दी के कार्यकलापों और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। समारोह के मुख्य अतिथि श्री नवीन कुमार प्रजापति,

वरिष्ठ सलाहकार एवं प्रभारी अधिकारी, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता ने अपने संभाषण में यह कहा कि हमारी प्रथम पहचान हमारी भाषा होती है। पूरे विश्व की जनसंख्या लगभग 800 करोड़ है जिसमें हिन्दी बोलने वाले 80 करोड़ हैं। उन्होंने कामिल बुलके, मैक्समुलर और जॉन स्मिथ की संज्ञा देते हुए हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विदेशी साहित्यकारों के भूमिका पर चर्चा की। इस अवसर पर संस्थान के मासिक हिन्दी न्यूजलेटर, अगस्त 2022 का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमतीसुमेधा दास, हिन्दी अनुवादक द्वारा किया गया।

संस्थान में हिन्दी सप्ताह के दौरान कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दिनांक 14 सितंबर 2022 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता से शुभारंभ किया गया। इसके बाद दिनांक 15 सितंबर 2022 को हिन्दी अनुवाद; 16 सितंबर 2022 को आशुभाषण प्रतियोगिता; दिनांक 17 सितंबर 2022 को कविता पाठ तथा अंत में दिनांक 19 सितंबर 2022 को क्विज (प्रश्नोत्तरी)। ये प्रतियोगितायें दो वर्गों में आयोजित की गईं- हिन्दी

भाषी तथा हिंदीतर भाषी जिनमें प्रतिभागियों की संख्या लगभग 90 के आसपास थी। हिन्दी निबंध तथा आशुभाषण प्रतियोगितायें वर्तमान विषयों पर आधारित थीं, जैसे प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन, हर घर तिरंगा अभियान, आजादी के अमृत महोत्सव और हिन्दी की विकास यात्रा आदि।

हिन्दी सप्ताह का समापन, 20 सितंबर 2022 को किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डा. बि. के. दास ने हिन्दी सप्ताह के सफल संचालन के लिए परिचालन समिति को धन्यवाद दिया और एक-दिवसीय वैज्ञानिक विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजन का सुझाव दिया। साथ ही उन्होंने वार्षिक गृह पत्रिका, नीलांजलि को विषय संदर्भित बनाने पर जोर दिया जिससे किसी महत्वपूर्ण मुद्दे से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर ध्यानाकर्षण किया जा सके। उन्होंने कहा कि हिन्दी परिचालन समिति में नए सदस्यों को भी शामिल किया जाए। इस समारोह के मुख्य अतिथि, श्री राजीव लाल, संयुक्त सचिव, भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई ने हिन्दी सप्ताह 2022 से जुड़े परिचालन समिति और प्रतियोगिताओं से जुड़े कर्मियों की सराहना की। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि, हालांकि सिफरी को हिन्दी कार्यों के लिए परिषद से कई बार पुरस्कार मिल चुके हैं, आगे संस्थान को भारत सरकार के राजभाषा हिन्दी संबंधित पुरस्कारों के लिए भी

प्रयास करना चाहिए। समापन समारोह में मासिक हिन्दी न्यूज़लेटर, सितंबर 2022 का विमोचन किया गया और प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिया गया। हिन्दी सप्ताह 2022 का सफल कार्यान्वयन निदेशक, डा. बि. के. दास के मार्गदर्शन में डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रभागाध्यक्ष एवं सर्वकार्याधिकारी, हिन्दी कक्ष; श्री संजीव कुमार साहु, वैज्ञानिक; श्री प्रवीण मौर्य, वैज्ञानिक; डा. सुमन कुमारी, वैज्ञानिक; सुश्री सुनीता प्रसाद, स.मु.तक.अधि. (हिन्दी) तथा श्रीमती सुमेधा दास, तकनीकी सहायक (हिन्दी) द्वारा किया गया।

बेलेडंगा आर्द्रभूमि की नर्सरी में मत्स्य बीज संग्रहण

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 27 अगस्त 2022 को बेलेडंगा समाज के नर्सरी तालाब में 125 किलोग्राम भारतीय प्रमुख कार्प के बीज का स्टॉक किया गया। एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन और उत्पादन वृद्धि के अनसुचित जाति एवं जनजाति कार्यक्रम के तहत एक पहल के रूप में डॉ बि. के, दास के मार्गदर्शन में स्टॉकिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह देखा गया है कि आर्द्रभूमियों में कृषि आधारित मात्स्यिकी में बीज की लागत प्रमुख लागतों में से एक है।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के अनसुचित जाति एवं जनजाति कार्यक्रम और एसडीजी कार्यक्रम का लक्ष्य बीज की लागत को कम करना और आर्द्रभूमि से मछली उत्पादन में वृद्धि करना है। कार्यक्रम के प्रथम भाग के रूप में, यह निर्णय लिया गया है कि पहले नर्सरी में मछली के बीज को पालना और फिर आर्द्रभूमि में उन्नत अंगुलिकाओं को स्टॉक करने से पहले पेन में रखा जाए। इस सिलसिले में बेलेडंगा आर्द्रभूमि के नर्सरी तालाब में भारतीय प्रमुख कार्प बीजों का स्टॉक किया गया था। रोहू के बीज की औसत लंबाई लगभग 5.5 सेमी और औसत वजन 1.6 ग्राम, कतला के बीज की औसत लंबाई 6.5 सेमी और वजन लगभग 3 ग्राम और मृगल बीज की औसत लंबाई और वजन क्रमशः 5 सेमी और 1.3 ग्राम के अंगुलिकाओं को स्टॉक किया गया, भारतीय प्रमुख कार्प का अनुपात क्रमशः रोहू: कतला: मृगल लगभग 5:3:2 था। आगे के विश्लेषण के लिए नर्सरी तालाब से पानी के नमूने एकत्र किए गए। बेलेडंगा बील में उपलब्ध मैक्रोफाइट्स पर अवलोकन किया गया और प्रलेखित किया गया। सुश्री गुंजन कर्नाटक, सुश्री संगीता चक्रवर्ती, श्री कौशिक मोंडल और श्री पूर्ण चंद्र डॉ. पी.के. परिदा के कार्यक्रम से जुड़े सदस्य थे।

टीम ने आर्द्रभूमि में स्टॉकिंग और हार्वेस्टिंग रणनीति के संबंध में सोसायटी हॉल में मछुआरों के साथ चर्चा भीकी गयी। मत्स्य कृषकों ने अवगत कराया कि आमतौर पर बड़ी मछलियों के मामले में मछली पकड़ना अगस्त से दिसंबर तक प्रतिबंधित होता है। SIF पकड़ने के लिए कोई प्रतिबंध नहीं है, इसे स्थानीय मछुआरों द्वारा साल भर पकड़ा जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकाला है कि एक कैलेंडर वर्ष में लगभग 120 दिनों के लिए मछली पकड़ी जाती है। पकड़ने के दौरान, मछुआरे समूह बनाते हैं जिसमें प्रत्येक समूह में 25-30 सदस्य होते हैं। चार से पांच ऐसे समूह सुबह 3 बजे से सुबह 6 बजे तक काम करते हैं। आमतौर पर 1-1.5 इंच आकार की जाली के जाल के साथ एक क्षेत्र को घेर कर पकड़ी जाती है। प्रमुख परिचालन मछली पकड़ने का काम जनवरी से शुरू होता है जहां रोजाना 100-

120 मछुआरे लगभग 50 -60 क्विंटल मछली पकड़ने के लिए अपना योगदान देते हैं। इस प्रमुख प्रकार की पकड़ में लगभग 6-8 नावों का उपयोग किया जाता है। इस कार्य के लिए लगभग 900 फीट लंबाई के नेट का इस्तेमाल किया जाता है। उपयोग किए जाने वाले अन्य विभिन्न प्रकार के जैसेके गिल जाल हैं, जैसे 1 इंच (पंटियस, टेंगरा या एसआईएफ जैसी लक्षित मछलियों) और 5 इंच। कास्ट नेट द्वारा प्रत्येक समूह 20-30 किग्रा/दिन मछली पकड़ता है। गिल नेट प्रतिदिन 70-80 व्यक्तियों द्वारा संचालित किया जाता है। सदस्यों के पास 450-650 फीट लंबाई के जाल होते हैं। मछुआरों के शिल्प और गियर देखने के लिए मछुआरों के घरों का दौरा किया गया। जाल के विभिन्न आकारों के जाल प्रलेखित किए गए। स्थानीय बांस के जाल भी प्रदर्शित किए गए। लिफ्ट नेट और पुश नेट (स्थानीय रूप से सिटकी कहा जाता है) को भी प्रलेखित किया गया था।

सुंदरबन, पश्चिम बंगाल की ग्रामीण आबादी की आजीविका में सुधार के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), बैरकपुर ने साउथ एशियन फोरम फॉर एनवायरनमेंट (सेफ), एक पंजीकृत सिविल सोसाइटी ऑर्गनाइजेशन (कोलकाता में स्थित) के सहयोग से ग्रामीण आबादी की आजीविका में सुधार के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया। डॉ बि. के दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी के सक्षम मार्गदर्शन में 5 से 8 सितंबर, 2022 के दौरान केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में इसका आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य सनाथन की प्रौद्योगिकियों के साथ प्रशिक्षण के माध्यम से सुंदरबन की ग्रामीण आबादी की आजीविका में सुधार करना था। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, डॉ. श्रीकांत सामंत, प्रभारी निदेशक, ने मंच को संबोधित किया और कहा कि उपलब्ध संसाधनों से अधिक उत्पादन की दिशा में आईसीएआर-सिफरी से प्राप्त प्रशिक्षण के ज्ञान को आगे बढ़ाये। डॉ. यू.के. सरकार, डॉ. एस. नाग और डॉ. एम. ए. हसन, विभागाध्यक्षों ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर मछली किसानों को ज्ञान और जानकारी प्रदान की। सुंदरबन, पश्चिम बंगाल के गोसाबा और कुलतली ब्लॉक के 24 प्रशिक्षुओं (16 महिला मछली किसान और 8 पुरुष मछली किसान) ने प्रशिक्षण कार्यक्रम से ज्ञान और कौशल प्राप्त किया।

प्रशिक्षुओं को खुले पानी में बाड़े की संस्कृति, सजावटी मछली पालन, और खुले पानी की मछली पालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, पानी की गुणवत्ता और रोग प्रबंधन रणनीतियों, मछली फ़ीड का विकास और आहार प्रोटोकॉल, छोटी स्वदेशी मछलियों का महत्व, जैव विविधता संरक्षण, मछली प्रजनन, समग्र मछली पालन, एकीकृत खेती और विपणन प्रबंधन से अवगत कराया गया। प्रशिक्षुओं को संस्थान की प्रयोगशालाओं और सजावटी मात्स्यिकी यूनिट, आरएएस, एक्वेरियम और फिश फीड यूनिट सहित सुविधाओं का भी दौरा कराया गया।

डॉ. अपर्णा रॉय, डॉ. पियाशी देबरॉय (समन्वयक) और श्री संथाना कुमार वी., वैज्ञानिक, (सह-समन्वयक) ने समापन सत्र का संचालन किया, जहां "**सुंदरबनेर ग्रामीण मनुशेर जिबोन जिबोन उन्नतकल्पे अंतरस्थलिया मत्स्यचश ओ तार बाबोस्तापोना**" पर एक बंगाली प्रशिक्षण मैनुअल एवं प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया। समापन समारोह में, एक मंचीय नाटक के साथ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी मंचन किया गया, जिसमें प्रशिक्षुओं ने सुंदरबन के पारंपरिक महिला और पुरुष मछुआरों की आजीविका परिदृश्य और सामाजिक मुद्दों को दर्शाया।

क्षेत्रीय केन्द्र, प्रयागराज में हिंदी सप्ताह का आयोजन

क्षेत्रीय केन्द्र, प्रयागराज में दिनांक 14 सितंबर से 20 सितंबर 2022 के बीच हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिंदी सप्ताह का उद्घाटन मुख्यालय तथा इसके क्षेत्रीय केन्द्रों के साथ संयुक्त रूप से ऑनलाईन में किया गया। शेष कार्यक्रम क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा अपने-अपने स्तर पर ऑफलाइन आयोजित किया। हिंदी सप्ताह का शुभारंभ करते हुए माननीय मुख्य अतिथि महोदय श्री नवीन प्रजापति ने रेखांकित किया कि – 'हिंदी आज वैश्विक भाषा बनती जा रही है। राष्ट्रभाषा और राजभाषा का अंतर बताते हुए हिंदी में कार्य करने हेतु मार्ग दर्शाये। उन्होंने आगे कार्मिकों से कहा कि हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हिंदी का राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय महत्व को देखते हुए राजभाषा हिंदी को दैनिक जीवन और कामकाज़ में नि:संकोच अपनाये।

हिंदी सप्ताह का समापन समारोह 29 सितंबर 2022 को क्षेत्रीय केंद्र में मनाया गया। इस समारोह में क्षेत्रीय केन्द्र के प्रभारी अध्यक्ष डॉ. धर्मनाथ झा ने माननीय मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत करते हुए अनुसंधान संबंधित गतिविधियों को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किया। राजभाषा हिंदी के बारे में उन्होंने कहा कि हिंदी को प्रयोगशाला से भूमि तक पहुंचाना चाहिए। केन्द्र के अनुसन्धान उपलब्धियों को किसानों के समक्ष सरल व सहज भाषा में रखने पर जोर दिया। अंत में उन्होंने हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को बधाई दी।

प्रभारी राजभाषा मो. कासिम ने हिंदी प्रगति और हिंदी सप्ताह की संक्षिप्त जानकारी सभा कक्ष में प्रस्तुत की। हिंदी सप्ताह समापन समारोह में प्रो. अखिलेश कुमार दूबे, अकादमिक निदेशक, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, प्रयागराज को आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि हम सभी को नवाचार को बढ़ावा देते हुए नवाचारी होना चाहिए अर्थात नये तरीके से काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि आज हिंदी का सोशल मीडिया से लेकर अन्य तकनीकों में इस्तेमाल हो रहा है। हिंदी हमारे दिल की भाषा है। इसलिए इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया। उन्होंने महात्मा गांधी का उदाहरण देते हुए कहा कि हमें अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। मुख्य अतिथि महोदय ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पहले संस्कृत भाषा में अपना लेखन शुरू किया था किंतु धीरे-धीरे वे अपला लेखन हिंदी भाषा में करने लेगे। आगे उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री विभिन्न राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर गर्व से हिंदी भाषा में संबोधन करते हैं।

इन प्रतियोगिता की विशेषता यह रही कि अधिकारियों और कर्मचरियों के बच्चों ने बड़ी खुशी और लगन के साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में भाग लिया। बच्चों के लिए हिंदी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। कई अधिकारियों और कर्मचारियों को पुरस्कार प्राप्त हुए है। समारोह के अतिथियों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। डॉ. मो. अबसार आलम ने धन्यवाद ज्ञापन दिया तथा कार्यक्रम की समाप्ति राष्ट्रगान से हुआ।

संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास का केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर और एसोसिएशन ऑफ एक्वाकलचारिस्ट द्वारा सम्मान

23-24 सितंबर 2022 को भाकृअनुप – केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर और एसोसिएशन ऑफ एक्वाकलचारिस्ट (एओए) द्वारा "आत्मनिर्भर भारत के लिए टिकाऊ जलकृषि" पर राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में भाकृअनुप के उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी) डॉ. बी. पी. मोहान्ती, ओयूएटी के कुलपति डॉ. पी. के. राउल, एओए के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं सचिव डॉ. एस. सौरभ, की मौजूदगी में भाकृअनुप – केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर के निदेशक डॉ. एस. के स्वाइन द्वारा संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास को सम्मानित किया गया।

अनुसूचित जाति उप योजना के तहत जलाशय में मत्स्य वृद्धि और मछली पकड़ने के उपकरणों के वितरण पर संवेदीकरण कार्यक्रम

16 सितंबर 2022 को तमिलनाडु के तिरुवल्लुर जिले के पूंडी जलाशय में आईसीएआर-सेंट्रल इनलैंड फिशरीज रिसर्च इंस्टीट्यूट (CIFRI) के बेंगलुरु क्षेत्रीय केंद्र द्वारा मछुआरों के लिए जलाशय मत्स्य वृद्धि पर एक संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम अनुसूचित जाति उप योजना के तहत आयोजित किया गया था। (एससी-एसपी) एवं 10 अनुसूचित मछुआरों को मछली पकड़ने के जाल वितरित किए गए।

डॉ. प्रीता पणिक्कर, प्रमुख, क्षेत्रीय केंद्र, ने सभा का स्वागत किया और अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र के सुधार में भाकृअनुप-सिफरी की भूमिका के बारे में बताया। सुश्री वी.एल. राम्या, वैज्ञानिक ने जलाशयों से मछली उत्पादन बढ़ाने में जलाशय मत्स्य प्रबंधन के महत्व पर बात की। मत्स्य पालन के सहायक निदेशक श्री वेलन, मत्स्य विभाग, तिरुवल्लुर जिले ने मछुआरों को विभिन्न विभाग योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विजय कुमार ने किया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. प्रीता पणिक्कर और सुश्री राम्या ने किया, सह-समन्वय सुश्री जेसना पी.के., सिबीना मोल एस. और डॉ. सोनालिका साहू ने किया।

संस्थान ने सतत आजीविका विकास के लिए सुंदरबन के 500 अनुसूचित जाति परिवारों की सहायता की

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 16-09-2022 को सुंदरबन मैंग्रोव क्षेत्रों के 19 गांवों के 500 अनुसूचित जाति के कृषक परिवारों को मछली, मछली चारा और चूना जैसे विभिन्न इनपुट प्रदान करके एक जन जागरूकता सह आजीविका पहल का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य ममत्स्य पालन के माध्यम से अपनी आय बढ़ाना था। भाकृअनुप-सिफरी की यह पहल पिछले 2 वर्षों से चल रही है। इसके अंतर्गत कृषक परिवार अपने पिछवाड़े के तालाबों में खेती करने के साथ-साथ प्रोटीन सप्लीमेंट के माध्यम से पोषण सुरक्षा प्रदान करते हैं। इस वर्ष 500 नए हितग्राहियों की आय बढ़ाने के लिए उन्हें जोड़ा जा रहा है। डॉ बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने क्षेत्रीय प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल और अध्यक्ष, कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी की उपस्थिति में जन जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने कहा कि इससे पहले सुंदरबन में अनुसूचित जाति उप-योजना (एससीएसपी) के माध्यम से लगभग 1500 परिवारों की आय बढ़ाकर रु. 35,000/- और उससे अधिक हो गयी जबकि संस्थान के द्वारा मात्र 8000/- निवेश किया गया । इन किसान परिवारों ने पूरे वर्ष अपने परिवार की पोषण सुरक्षा के लिए प्रोटीन की आवश्यकता को पूरा करने के अलावा किसान परिवारों ने स्थानीय राष्ट्रीयकृत बैंक में बचत भी की है और मत्स्य गतिविधियों से होने वाली आय को जमा किया है। इसी तरह के मॉडल को अधिक लाभार्थियों को कवर करने के लिए दोहराया गया है, जो अक्सर प्राकृतिक आपदा से प्रभावित होते हैं और उनके पास धान की खेती के अलावा कोई वैकल्पिक आजीविका नहीं होती है। पिछले 2 वर्षों में खतरनाक COVID-19 महामारी के अलावा अम्फान, यस, जवाद आदि प्राकृतिक आपदाओं ने उनकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ तोड़ दी है। भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के ये सार्थक हस्तक्षेप आने वाले वर्षों में एक स्थायी आजीविका विकल्प का नेतृत्व कर सकते हैं। श्री मनोज कुमार,क्षेत्रिय प्रबंधक, एसबीआई ने किसानों को बिना किसी सह -पार्श्व सुरक्षा के 2 लाख जो इन कृषक समुदायों को 7% ब्याज के साथ प्रदान किए जाने वाले किसान क्रेडिट कार्ड के रूप में कार्य करेगा और यदि समय पर भुगतान किया जाता है तो इसे 2% तक कम किया जा सकता है जो सुंदरवन क्षेत्र के दूर-दराज के हिस्से में आजीविका वृद्धि कार्यक्रमों को बढ़ावा देगा। श्री लोकमन मोल्ला, अध्यक्ष, कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी ने मूल्यांकन किया कि गरीब से गरीब व्यक्ति के लिए संस्थान के नेक हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप एक आकर्षक आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ है और ग्रामीण गरीबों को सशक्त बनाया गया है जिसे विभिन्न स्थानीय समाचार पत्रों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा कवर

किया गया था। इसके अलावा आज 500 अनुसूचित जाति के कृषक परिवारों को मछली, मछली चारा और चूना जैसे आदानों का वितरण किया गया। संस्थान और कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी का संयुक्त कार्यक्रम परुष मछुआरा समुदाय के अलावा महिलाओं के लिए भी सतत विकास लक्ष्य को पूरा करेगा और लाभार्थियों को सुविधा और रसद सहायता प्रदान करेगा।

जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, डॉ. पी. के. परिदा, वैज्ञानिक सह प्रभारी, एससीएसपी ने पिछवाड़े के तालाब में खेती की एक विस्तृत प्रस्तुति दी, जिसमें प्री-स्टॉकिंग प्रबंधन, स्टॉकिंग और फीडिंग और पूरे खेती अभ्यास के दौरान मछली की वृद्धि का माप शामिल है। यह पहल कम इनपुट-आधारित कृषि पद्धति को भी संबोधित कर रही है, जो पारिस्थितिकी तंत्र के साथ-साथ क्षेत्र की जलवायु परिस्थितियों को देखते हुए सबसे बड़े डेल्टा क्षेत्र के बीच जैविक खेती को रोकती है। माननीय प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय मिशन पीएमएमएसवाई की परिकल्पना, "किसानों की आय को दोगुना करना" को संबोधित करने के दृष्टिकोण अंतर्गत। पूरे कार्यक्रम को एक निर्देशित प्रक्षेपण पद्धति के लिए नियोजित किया गया था जहां 30-35 लाख का न्यूनतम निवेश 150 लाख की आय प्रदान करेगा।

जन जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद लाभार्थियों को उनके पहचान प्रमाण पत्र , अनुसूचित जाति प्रमाण पत्र एकत्र करने के बाद इनपुट का वितरण किया गया। इन गांवों में पिछवाड़े के तालाबों का उपयोग उनके पीने और मछली पालन के उद्देश्य से किया जाता है। चूँकि इस क्षेत्र में अधिकांश अनुसूचित जाति परिवारों (लगभग 60-70%) का प्रभुत्व है और ये आपदा प्रवण क्षेत्र हैं जहाँ कोई वैकल्पिक आजीविका नहीं है, इसलिए इस गतिविधि की योजना बनाई गई और इसे क्रियान्वित किया गया। इस कार्यक्रम का समन्वय आईसीएआर-सिफरी के डॉ. पी.के. परिदा, श्री सुजीत चौधरी, सुश्री एस. भौमिक, डॉ. श्रेया भट्टाचार्य और मिलन तीर्थ सोसाइटी, कुलटोली के सदस्यों द्वारा किया गया।

सजावटी मछली पालन गाँव के निर्माण से सुंदरबन की महिलाओं की आजीविका को दिया गया बढ़ावा

सजावटी मछली पालन से ग्रामीण महिलाओं की घरेलू अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा और भारतीय निर्यात के साथ-साथ घरेलू बाजार में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा भी इस पर जोर दिया गया था और पीएमएमएसवाई योजना के अंतर्गत इसे प्राथमिकता दी जा रही है। सुंदरबन की महिलाओं की आजीविका में सुधार करने के लिए आईसीएआर-सिफ़री ने पचपारा-नारायणताला गांव में सजावटी मछली पालन को बढ़ावा दिया, जिसमें कुल 50 अनुसूचित जाति (एससी) महिला लाभार्थियों के पांच स्वयं सहायता समूह शामिल हुए। पश्चिम बंगाल सजावटी मछली का केंद्र है, और देश के विभिन्न हिस्सों के साथ ही विदेशों में भी निर्यात करता हैं । इसी कारण सरकार के अनुसूचित जाति कार्यक्रम के तहत 50 लाभार्थियों को प्रशिक्षण, प्रदर्शन के साथ-साथ प्रारंभिक इनपुट जैसे 500 लीटर का फाइबर टैंक, एरेटर, और बाकी सामग्री जो रु. 18,000/-. की कीमत की थी, वह प्रदान की गई । सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने 17-09-2022 को कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी और रोटरी इंटरनेशनल के सहयोग से कुलतली के पचपारा-नारायणताला गांव की ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए जन जागरूकता सह प्रशिक्षण सह इनपुट वितरण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने सजावटी मछली पालन के विभिन्न पहलुओं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए

इसके अवसरों पर जोर दिया। इससे रुपये 500-2000/परिवार/माह की आय होगी। इस कार्यक्रम से पहले संस्थान द्वारा अन्य 50 परिवारों की भी सहायता की गई थी जो इस स्रोत से अपनी आजीविका को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। श्री लोकमन मोल्ला, अध्यक्ष, कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी ने आईसीएआर-सिफ़री के परामर्श से लाभार्थियों के चयन का समन्वय किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सजावटी मछली पालन गतिविधि से महिला समुदाय को इस कार्यक्रम से और बड़े पैमाने पर जुड़ने में मदद मिलेगी और यह सजावटी मछली पालन व्यवसाय शुरू करने का केंद्र होगा। डॉ. पी. के. परिदा, वैज्ञानिक सह प्रभारी, एससीएसपी ने खेती के आर्थिक लाभों और संस्थान द्वारा अन्य महिला समुदाय को दी गई सहायता के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि लंबे समय में अमेज़ॅन और अन्य ई-मार्केटिंग के साथ नेटवर्किंग से जुड़ने से समुदाय को स्थायी तरीके से बढ़ने में मदद मिलेगी। डॉ. एस. भट्टाचार्य ने एक विस्तृत लाइव प्रदर्शन दिया और एक विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए सजावटी मछली प्रजनन और पालन टैंक में लाइव-बियरर को पालने के तरीके के बारे में बताया। कार्यक्रम के अंत में प्रत्येक स्वयं सहायता समूह को बांग्ला भाषा में लिखे गई एक पुस्तिका (सजावटी मछली पालन के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शिका) दी गई। एक सजावटी मछली गांव बनाने के लिए आईसीएआर-सिफ़री द्वारा विकसित अभिनव दृष्टिकोण संयुक्त राष्ट्र के एसडीजी -5 को संबोधित करने के लिए महिलाओं के बीच ग्रामीण उद्यम विकसित करने की दिशा में बढ़ता हुआ एक कदम है।

आईसीएआर-सिफरी ने विश्व नदी दिवस मनाया

नदियों के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने और उनके संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए हर साल सितंबर के चौथे रविवार को विश्व नदी दिवस मनाया जाता है। विश्व नदी दिवस की थीम "जैव विविधता के लिए नदियों का महत्व" थी। आईसीएआर - केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान ने 25 सितंबर 2022 को तीन अलग-अलग स्थानों अर्थात् करेला बाग घाट, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश और सोनिया विहार, दिल्ली में यमुना नदी के तट पर और कोडालबस्ती, सुभासिनी क्षेत्र में 'विश्व नदी दिवस' मनाया। जलदापारा राष्ट्रीय उद्यान परिसर, पश्चिम बंगाल में तोर्शा नदी। आईसीएआर-सिफरी के प्रयागराज केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ. धर्म नाथ झा ने जोर देकर कहा कि नदियां प्रकृति की देन हैं जिसमें जैव विविधता का पोषण और संरक्षण होता है, इसलिए इसे बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए, इसके लिए किसका उपयोग किया जाना चाहिए? नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों में कीटनाशकों और प्लास्टिक को कम किया जाना चाहिए। उन्होंने आम जनता का आव्हान किया कि जैविक और अकार्बनिक कचरे को नदियों में न बहने दें, कृषि, औद्योगिक और घरेलू उपयोग के लिए अनावश्यक पानी की खपत को कम करें, वृक्षारोपण करके नदियों के कटाव को रोकें, आदि। करेला के पार्षद श्री नंदलाल निषाद नंदा प्रयागराज नगर निगम के बगवार्ड ने लोगों से नदियों में जल और मछली संरक्षण पर ध्यान देने का अनुरोध किया. उन्होंने किशोर मछलियों के संरक्षण और उचित जाली आकार के जाल के उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (नमामि गंगे) के प्रतिनिधि श्री राजेश शर्मा, डॉ. अबसार आलम, डॉ. वेंकटेश रामाराव ठाकुर, वैज्ञानिकों ने भी लोगों से बातचीत की और जैव विविधता के महत्व और किए जाने वाले उपायों की जानकारी दी. इस अवसर पर नदी तट पर रहने वाले मछुआरे, व्यवसायी, स्नानार्थियों और छात्रों सहित 100 से अधिक लोगों ने भाग लिया और अपने विचार व्यक्त किए। नमामि गंगे के प्रतिनिधि श्री राजेश शर्मा ने सभी प्रतिभागियों को नदियों को स्वच्छ रखने की शपथ दिलाई। जलदापारा राष्ट्रीय उद्यान परिसर, पश्चिम बंगाल में तोर्शा नदी के तट पर कोडालबस्ती और सुभासिनी में स्थानीय लोगों को नदी संरक्षण के विभिन्न पहलुओं जैसे नदी तट पर चाय बागानों में कीटनाशकों के कम/गैर-उपयोग, प्लास्टिक और अन्य चीजों को फेंकने से परहेज करने के बारे में बताया गया। कचरा नदी में डालना, नदी तट के कटाव को रोकने के लिए नदी तट पर वृक्षारोपण, बांधों/बैराजों से पर्याप्त पानी छोड़ना, कृषि/औद्योगिक और अन्य उद्देश्यों के लिए नदियों से पानी की कम निकासी, वैज्ञानिक मछली पकड़ने के गियर के उपयोग से नदी की जैव विविधता को बनाए रखना, विनाशकारी से बचना मछली पकड़ने के तरीके जैसे इलेक्ट्रोफिशिंग या ज़हर के साथ मछली पकड़ना कुछ ऐसे विषय हैं जिन पर कार्यक्रम के दौरान चर्चा की गई। कार्यक्रमों में मछुआरों सहित लगभग चालीस लोगों ने भाग लिया।

संस्थान और मैसर्स दास और कुमार के मध्य "आईसीएआर सिफरी सर्कुलर केज" हेतु लाइसेंस समझौता

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता; एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड तथा मैसर्स दास एंड कुमार,

वाराणसी द्वारा दिनांक 27 सितंबर 2022 को आईसीएआर-सिफरी सर्कुलर केज के ट्रांसफर लाइसेंस समझौते पर हस्ताक्षर किया गया। आईसीएआर-सिफरी पाँच वर्ष की अवधि के लिए यह अनैकान्तिक (non-exclusive) लाइसेंस प्रदान करता है जिसके अंतर्गत देश के किसी भी भाग में आईसीएआर-सिफरी सर्कुलर केज का निर्माण और बिक्री किया जा सकता है। व्यावसायीकरण प्रक्रिया आईसीएआर की वाणिज्यिक शाखा, एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड के माध्यम से की गई।

बैठक के आरंभ में डॉ. गणेश चंद्र, प्रभारी, संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन इकाई ने सभी अतिथियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और आईसीएआर-सिफरी सर्कुलर केज प्रौद्योगिकी के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वर्ष 2017 से आईसीएआर-सिफरी जीआई केज लाइसेंस के बाद मैसर्स दास और कुमार को संस्थान की तरफ से लाइसेंस प्राप्त यह दूसरी तकनीक है।

इस अवसर पर डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी ने इस प्रौद्योगिकी के विकास से जुड़े सभी वैज्ञानिकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि पिछले पांच वर्षों में संस्थान ने सात प्रौद्योगिकियों का व्यवसायीकरण किया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि आईसीएआर-सिफरी सर्कुलर केज (16 मीटर व्यास और 5 मीटर गहराई वाली) जैसे गोलाकार पिंजरे का उत्पादन परिमाप 1005 क्यूबिक मीटर है जो अन्य किसी भी 12 आयताकार पिंजरों (6 मी. X 6 मी. X 4 मी.) के समतुल्य है और इससे 25-30 टन तक मछली उत्पादन किया जा सकता है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत पिंजरे में मछली पालन को सर्वोपरि महत्व दिया गया है।

डॉ दास ने आगे कहा कि अब समय आ गया है कि भारत के विभिन्न हिस्सों में स्थित जलाशयों और आर्द्रभूमि में राज्य मत्स्य विभाग के साथ साझेदारी में इस नई पालन तकनीक को और भी लोकप्रिय बनाया जाए। उन्होंने कहा कि आईसीएआर-सिफरी वर्तमान में आईओटी के उपयोग से पिंजरों में मछलियों की फीडिंग और निगरानी सहित इनमें मछली पालन के स्वचालन तकनीक पर काम कर रहा है। साथ ही, पिंजरों में एंटी -फाउलिंग जाल पर भी कार्य चल रहा है।

डॉ. जी एच पाइलन, केंद्र प्रमुख, भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, कोलकाता केंद्र ने सिफरी के वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इन प्रौद्योगिकियों से मछली उत्पादन के साथ जलाशयों और आर्द्रभूमि की उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी और अंततः किसानों और उद्यमियों को अत्यधिक लाभ होगा।

श्री यश अग्रवाल, भागीदार, मैसर्स दास एंड कुमार, वाराणसी ने कहा कि उनका संगठन लंबे समय से सिफरी से जुड़ा हुआ है और इस प्रौद्योगिकी के विकास में दोनों संगठनों की सहभागिता अच्छा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि यह तकनीक कम लागत वाली, किफायती और किसान हितैषी है तथा इससे किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा।

आईसीएआर-सिफरी सर्कुलर एचडीपीई पिंजरे संरचनात्मक तौर पर दूसरी आयताकार पिंजरों की तुलना में अधिक मजबूत होते हैं और मजबूत लहरों और तूफान का सामना कर सकते हैं। इन पिंजरों को जल में आसानी से स्थापित किया जा सकता हैं क्योंकि ये जाल के साथ पूरी तरह उपयुक्त होते हैं। इनमें इंडियन मेजर कार्प जैसी बहुमूल्य मछली प्रजातियों का पालन किया जा सकता है। पिंजरे की चौड़ाई 1 मीटर होती है जिसमें बड़ी मछलियों के उत्पादन के लिए 1005 क्यूबिक मीटर जल रह सकता है। इसकि संरचना गोलाकार होने के कारण इसमें 25 मीट्रिक टन तक मछली उत्पादन किया जा सकता है। इस पिंजरे के साथ तैरता हुआ मगर स्थिर एक मीटर का प्लेटफॉर्म लगा होता है जिसपर आसानी से पैदल चला जा सकता है।

आंध्र प्रदेश के मत्स्य अधिकारियों के क्षमता निर्माण लिए विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित 'टैंक आधारित मछली उत्पादन मॉडल' कार्यक्रम

आंध्र प्रदेश सरकार ने राज्य के विकास लिए मत्स्य क्षेत्र की पहचान एक विकास इंजन के रूप में की और यह मछली उत्पादन के लिए सिंचाई टैंकों सहित मत्स्य संसाधनों के उपयोग को बढ़ावा देता है। टैंक मत्स्य पालन के विकास की दिशा में, आंध्र प्रदेश सरकार ने विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित एपीआईआईएटीपी परियोजना शुरू की है, जिसके तहत आंध्र प्रदेश के 12 जिलों में मत्स्य पालन के विकास के लिए कुल 243 टैंकों की पहचान की गई है। आईसीएआर-सेंट्रल इनलैंड फिशरीज रिसर्च इंस्टीट्यूट, बैरकपुर ने सरकार के मत्स्य विभाग के अधिकारियों के लिए 20 -25 सितंबर, 2022 तक "टैंक आधारित मछली उत्पादन मॉडल" पर क्षमता निर्माण सह एक्सपोजर विजिट कार्यक्रम आयोजित किया। विश्व बैंक परियोजना-APIIATP के तहत आयोजित किया गया इस एक्सपोजर विजिट सह क्षमता निर्माण कार्यक्रम में परियोजना के जिलों के मत्स्य विभाग से बीस अधिकारियों ने भाग लिया।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी ने प्रतिभागियों को राज्य में रोजगार और आजीविका सुरक्षा उत्पन्न करने के लिए टैंक-आधारित मछली उत्पादन मॉडल विकसित करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। अपने संबोधन में, डॉ. दास ने आंध्र प्रदेश राज्य में एक्वाकल्चर विकास की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी दी, जिसमें इस क्षेत्र द्वारा संबोधित प्रमुख स्थिरता के मुद्दों पर प्रकाश डाला गया जैसे एंटीबायोटिक दवाओं का अंधाधुंध उपयोग, रोगजनकों के अवशेष और रोगाणुरोधी प्रतिरोध और मानव स्वास्थ्य पर बाद के प्रभाव। उन्होंने संस्कृति-आधारित मत्स्य पालन प्रथाओं के लिए बड़े आकार के फिंगरलिंग्स के भंडारण के महत्व पर जोर दिया और स्थायी मत्स्य

पालन की दिशा में अअंतर्स्थलीय खुले पानी में प्राकृतिक मछली पालन को बढ़ावा देने के माध्यम से प्राकृतिक उत्पादकता का उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित किया।

5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में टैंकों और जलाशयों के प्रबंधन के विभिन्न विषयों पर जोर दिया गया जैसे उत्पादन वृद्धि के लिए सीबीएफ, टैंक मत्स्य पालन के उत्पादन कार्यों को परिभाषित करने में जैविक और अजैविक विशेषताएं, जल गुणवत्ता प्रबंधन, बाड़े की संस्कृति, जीआईएस के अनुप्रयोग और रिमोट सेंसिंग, मछली रोग टैंक मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए प्रबंधन, चारा तैयार करना और खिलाने के प्रोटोकॉल, बीज प्रमाणन, अर्थशास्त्र और विपणन, संस्थागत व्यवस्था और शासन। प्रशिक्षुओं को सीटू मात्स्यिकी में केज और पेन कल्चर सिस्टम को प्रदर्शित करने के लिए झारखंड के मैथन जलाशय के क्षेत्र भ्रमण पर ले जाया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में, प्रतिभागियों ने अपनी संतुष्टि व्यक्त की और टिप्पणी की कि प्रशिक्षण के दौरान उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान से उन्हें इन टैंकों से लक्षित उत्पादन प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- संस्थान ने गंगा, ब्रह्मपुत्र, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी सहित देश के 20 नदियों के 300 नमूना संग्रहण स्थलों से प्राप्त जलीय पर्यावरणीय मापदंडों पर डेटाबेस विकसित किया।
- गंगा नदी के मुहाना क्षेत्र की मछली विविधता की स्थिति का आंकलन करने के लिए सर्वेक्षण में मानसून अवधि के दौरान 37 विभिन्न मत्स्य प्रजातियों का पता चला।
- पश्चिम बंगाल में गोदाखली, डायमंड हार्बर और फरक्का में कुल अनुमानित हिलसा (टेनुअलोसा इलिशा) लैंडिंग 1081 किलोग्राम था।
- अगस्त 2022 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछली लैंडिंग उतरने का अनुमान 11.23 टन था, जो अगस्त 2021 की तुलना में कुल मत्स्य पकड़ में 13.54% की वृद्धि दर्शाता है।

कार्यक्रम

- संस्थान के निदेशक ने विचार-मंथन सत्र, "पश्चिम बंगाल में कृषि जल प्रबंधन : राष्ट्रीय कृषि मुद्दे और रणनीतियाँ" में भाग लिया। यह सत्र राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी और भाकृअनुप-केंद्रीय जूट और संबद्ध रेशा अनुसंधान संस्थान द्वारा 27 अगस्त, 2022 को आयोजित किया गया था। इस अवसर पर निदेशक महोदय "आर्द्रक्षेत्रों में जल प्रबंधनः समस्याएं और संभावनाएं" पर एक प्रस्तुति दी।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 29 अगस्त 2022 को भारतीय विज्ञान काँग्रेस संस्था, कोलकाता के कार्यकारी समिति की विशेष बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 7 अगस्त 2022 को आईसीएआर-निनफेट के सहयोग से आईसीएआर-एनएएआरएम द्वारा कोलकाता में आयोजित एग्री उड़ान फूड एंड एग्रीबिजनेस एक्सेलरेटर 5.0 के रोड शो में भाग लिया।
- भाकृअनुप-सिफरी के वैज्ञानिक ने 14 सितंबर 2022 को आयोजित पश्चिम बंगाल मात्स्यिकी और प्राणी विश्वविद्यालय के अनुसंधान और विस्तार परिषद की बैठक में भाग लिया।
- भाकृअनुप-सिफरी के निदेशक और वैज्ञानिक ने 23-24 सितंबर 2022 के दौरान भाकृअनुप—केन्द्रीय मीठाजल जीव अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा में "आत्मनिर्भर भारत के लिए सतत जलीय कृषि" पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन (राजभाषा हिंदी) में भाग लिया।

प्रशिक्षण

- संस्थान में नियोतिया विश्वविद्यालय के छात्रों (बी.एफ.एससी - अंतिम वर्ष) के लिए दिनांक 26 अगस्त-1 सितंबर, 2022 के दौरान "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 23 छात्रों ने भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक 5-8 सितंबर, 2022 के दौरान एक पंजीकृत नागरिक समाज संगठन (कोलकाता स्थित) SAFE के सहयोग से "सुंदरबन, पश्चिम बंगाल की ग्रामीण आबादी की आजीविका में सुधार के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 4-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सुंदरबन से 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक 20-24 सितंबर, 2022 के दौरान आंध्र प्रदेश सरकार के मात्स्यिकी विभाग के मात्स्यिकी अधिकारियों के लिए "टैंक आधारित मछली उत्पादन मॉडल" पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 20 अधिकारियों ने भाग लिया।
- पश्चिम बंगाल (फ्रेजरगंज, गोडाखली, मालदा, फरक्का, राधानगर, बेगमगंज), बिहार (बक्सर, भागलपुर) और झारखंड (राजनगर, श्री घर, राजमहल) में गंगा मत्स्य पालन, हिलसा और डॉल्फिन के संरक्षण की दिशा में कुल 12 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस जागरूकता कार्यक्रम में स्थानीय मछुआरों के साथ कुल 307 मछुआरों को जागरूक किया गया।
- मंचनबेले जलाशय में दिनांक 29 अगस्त 2022 को अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत जलाशय मत्स्य प्रबंधन और मछुआरों के लिए मछली पकड़ने के उपकरणों के वितरण पर संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 50 मछुआरों ने भाग लिया.
- दिनांक 16 सितंबर 2022 को पूंडी जलाशय में अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत मत्स्य पालन वृद्धि और मछुआरों के लिए मछली पकड़ने के उपकरणों के वितरण पर संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 50 मछुआरों ने भाग लिया।

अन्य

- संस्थान ने दिनांक 25 अगस्त 2022 को गंगा नदी के उभरते प्रदूषकों पर केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नोएडा द्वारा आयोजित तकनीकी चर्चा में भाग लिया। निदेशक, आईसीएआर-सिफरी ने इस विषय पर एक समेकित प्रस्तुति दी।
- संस्थान ने दिनांक 5 सितंबर 2022 को मत्स्य विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा भारत में विदेशी जलीय प्रजातियों के परिचय पर राष्ट्रीय समिति की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 5-6 सितंबर 2022 तक वर्ल्ड फिश सेंटर, पेनांग, मलेशिया में फिशबेस और समुद्री जीवन पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया। इस अवसर पर एक प्रस्तुति दी गई।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

[WORLD RIVER DAY]

Central Inland Fisheries Research Institute scientists stress need to protect water bodies

HT Correspondent

PRAYAGRAJ : World River Day was observed by Indian Council of Agricultural Research (ICAR)- Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI), Prayagraj on the banks of Yamuna on Sunday.

The event was held at Karela Bagh Ghat in Prayagraj and Sonia Vihar Yamuna Ghat in New Delhi. The scientists of the institute expressed their views on the importance of the river and the effort to save it. A pledge to not allow the rivers to ... tered to all present.

This year's theme was "the importance of rivers for biodiversity". Dharam Nath Jha, the centre head of the institute, informed the people present that rivers are a gift of the nature in which biodiversity is nurtured and conserved.

"So, there should be a continuous effort to maintain it and for this the use of pesticides and plastics in catchment areas of rivers should be reduced. Do not allow waste, both organic and inorganic, to flow into rivers and reduce unnecessary water consumption for agricul... uses. There is also a need to stop erosion of rivers through afforestation and other steps," he ...

A pledge to protect rivers being administered during an event in Prayagraj on Sunday. HT PHOTO

Scientists of the Inst... Absar Alam and DR Th... interacted with people ... informed them about ... importance of diversity o... and the measures to be tak... save them.

Rajesh Sharma, repres...tive of Namami Gange Mi... administered the pledge to ... the rivers clean.

On this occasion, large ... ber of people, including fi... men, businessmen and stu... residing on the banks o... river also expressed their v... All people present promis... keep the rivers clean and ...

সিফরী দ্বারা বিশ্ব নদী দিবস का आयोजन किया गया

প্রান্তিক মৎস্যজীবীদের সহায়তায় কেন্দ্রীয় অন্তস্থলীয় মৎস্য গবেষণা সংস্থা

कमोदवन: नाम 'ऊंचा गांव' हालत शर्मसार करने वाले

सिफरी में हिन्दी सप्ताह 2022 का उद्घाटन समारोह

प्रयागराज सिफरी द्वारा 'विश्व नदी दिवस' का आयोजन

बंध भारत संवाददाता

प्रयागराज। भाकृ अनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, प्रयागराज के द्वारा 25 सितंबर 2022 को यमुना नदी के तट पर 'विश्व नदी दिवस' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम प्रयागराज के करैला बाग घाट पर तथा दिल्ली में सोनिया विहार, यमुना घाट पर मनाया गया। इसमें नदी की महत्ता और बचाने के प्रयास पर संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा विचार व्यक्त किया गया साथ ही नदियों को लुप्त न होने देने का संकल्प लिया गया। इस वर्ष के विश्व नदी दिवस का मूल विषय (थीम) था : जैव विविधता के लिए नदियों का महत्व। संस्थान के केंद्राध्यक्ष डॉ धर्म नाथ झा ने उपस्थित लोगों से कहा कि नदियाँ प्रकृति का उपहार है जिसमें जैव विविधता पोषण और संरक्षण होता है। इसलिए इसे बनाए रखने का सतत प्रयास होना चाहिए। इसके लिए नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों में कीटनाशकों और प्लास्टिक उपयोग को कम करें, अपशिष्ट जैविक और अजैविक कचरे को नदियों में न बहने दें, कृषि, औद्योगिक एवं घरेलू उपयोगों के लिए अनावश्यक जल की खपत को कम करें, वनरोपण कर के नदियों के कटाव को रोकें आदि का प्रयास करना चाहिए।

संस्थान के वैज्ञानिक डॉ अबसार आलम एवं डॉ डी आर ठाकुर ने लोगों से मत्स्य विविधता के महत्व और संरक्षण के उपाय के बारे में बताया। समारोह में करैला बाग के सभापति नंदलाल निषाद नेता ने लोगों से जल और मत्स्य संरक्षण पर ध्यान देने के लिए कहा। कार्यक्रम में नमामि गंगे के प्रतिनिधि राजेश शर्मा उपस्थित थे तथा सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने नदियों को स्वच्छ रखने का संकल्प दिलाया। इस अवसर पर नदी तट पर निवास करने वाले सामान्य जन, मछुआरे, व्यवसायी, स्नानार्थी, विद्यार्थी आदि ने भाग लिया और अपना विचार रखा। उपस्थित सभी श्रोताओं ने नदी को स्वच्छ रखने और बचाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को व्यक्त किया।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है